अपनी इस भूमिका के ज़रिए ये इस अनोखी इकोसिस्टम को ज़िन्दा रखने में मदद करते हैं।

उक्त सिरफिरी चींटियां यहां पहले नहीं होती थीं। किसी वजह से 1930 के दशक में ये यहां पहुंचीं और इनकी आबादी में ज़बर्दस्त उछाल आया। 1990 के दशक में तो इनकी आबादी विस्फोटक हो गई। ये चींटियां विशाल बस्तियां बनाकर रहती हैं। हज़ारों हैक्टर में फैली इन बस्तियों के कारण द्वीप पर प्रति हैक्टर 7 करोड़ तक चींटियां हो गई थीं। यदि कोई केंकड़ा इनकी बस्ती में पहुंच जाए तो ये सिरफिरी चीटियां उस पर फॉर्मिक अम्ल की बौछार करेंगी और फिर उसे चट कर जाएंगी। इस वजह से द्वीप पर केंकड़ों की तादाद घटने लगी। केंकड़ों को बचाने के लिए चींटियों पर काबू पाना आवश्यक था। अतः ऑस्ट्रेलिया सरकार की एक एजेंसी एन्वॉयर्मेंट ऑस्ट्रेलिया और मेलबोर्न के मोनाश विश्वविद्यालय ने इस इलाके का सर्वेक्षण किया ताकि चींटियों की बस्तियों का पता लगाया जा सके। इसके बाद उन्होंने हेलीकॉप्टर से ज़हरीला चारा इन बस्तियों पर फेंका। यह काम सूखे मौसम में किया गया जब केंकड़े आम तौर पर अपने बिलों में घुसे रहते हैं। दूसरी ओर, केंकड़ों के लिए मुर्गी का चारा भी फेंका गया ताकि वे ज़हरीले चारे की ओर न जाएं। ज़हर ऐसा था जिसका पक्षियों और स्तनधारियों पर कोई असर नहीं होता था। हेलीकॉप्टर के इस्तेमाल से फायदा यह हुआ कि मुश्किल से मुश्किल जगहों पर भी ज़हर बुझा चारा फेंका जा सका। अनुमान है कि चींटियों की आबादी में 99 फीसदी की कमी आई है। अब इस द्वीप की लगातार निगरानी की जाएगी और ज़रूरी हुआ तो यह कार्यवाही फिर से दोहराई जाएगी। *(स्रोत फीचर्स)*

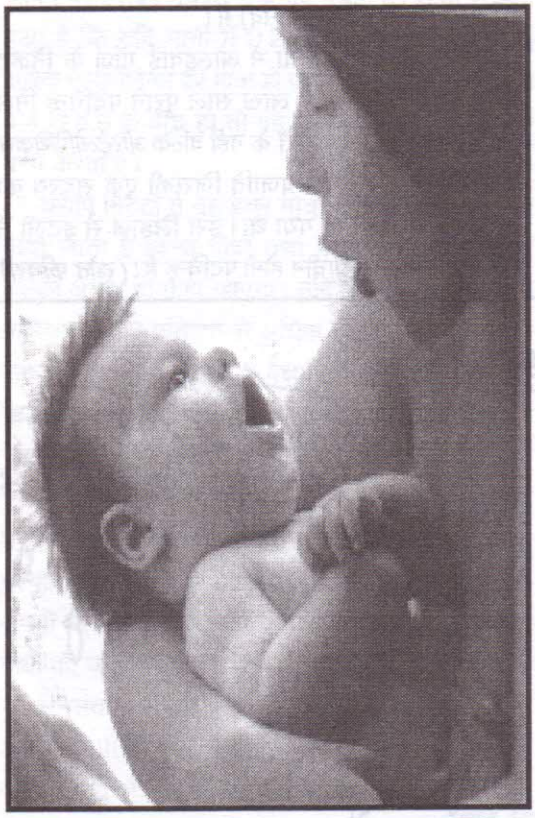

मां की तुतलाहट बच्चों को ज़्यादा समझ आती है

मांओं के खुश होने का एक और कारण। अपने छोटे बच्चों से तुतलाते, लड़ियाते हुए बात करना तो आम बात है। लेकिन बच्चे के लिए मां की बोली पिता की बोली से ज़्यादा अर्थपूर्ण होती है। वैसे बच्चे उस बोली से क्या अर्थ निकालते हैं यह जानना तो व्यावहारिक रूप में असम्भव ही है।

पेन्सिल्वेनिया में बैकलेहम में लेहाई विश्वविद्यालय के एक मनोवैज्ञानिक गेराल्ड मेकरॉबर्ट्स का कहना है कि बच्चे बोले गए वास्तविक शब्दों की बजाय उनमें निहित भावनात्मक पहलू या 'प्रभाव' को ज़्यादा आसानी से पकड़ते हैं। वैसे यह अभी भी अस्पष्ट है कि बच्चों से अलग-अलग तरह की बातें करने के दौरान वयस्क अपनी आवाज़ में लय, उतार-चढ़ाव और ज़ोर देना जैसी विभिन्न ध्वनि सम्बंधी विशेषताएं कैसे डालते हैं।

तो सेन जोस, कैलिफोर्निया के आई.बी.एम. के अलमादेन